इतिहास के माध्यम से विश्व बिमारियों एवं महामारियों का अध्ययन

Mk0 foU/kh d|ekjh
,e0 ,0] ih0&,p0 Mh0
bfrgkl foHkkx
ल0 ना0 मि0 विष्वविद्यायल njHkxk

संक्रामक महामारियों को विश्वमारी कहते हैं जो बहुत बड़े भूभाग जैसे कई महाद्वीपों में फैल चुकी हो। यदि कोई रोग एक विस्तृत क्षेत्र में फैल हुआ हो किन्तु उससे प्रभावित लोगों की संख्या में वृद्धि न हो रही हो, तो उसे विश्वमारी नहीं कहा जाता। इसके अलावा, फ्लू विश्वमारी के अन्दर उस फ्लू को शामिल नहीं किया जाता जो मौसमी किस्म के हो और बारबार होते रहे हों।–

कोई भी बीमारी या दुर्दशा सिर्फ इसलिए विश्वमारी नहीं कहलाती है क्योंकि यह बड़े पैमाने पर फैलता है या इससे कई लोगों की मौत हो जाती है बल्कि इसके साथसाथ इसका संक्रामक होना भी बहुत जरूरी है। उदाहरण के लिए–, कैंसर से कई लोगों की मौत होती है लेकिन इसे एक विश्वमारी की संज्ञा नहीं दी जा सकती है क्योंकि यह रोग संक्रमणकारी या संक्रामक नहीं है।

सम्पूर्ण इतिहास में चेचक और तपेदिक जैसी असंख्य विश्वमारियों का विवरण मिलता है। एचआईवी (HIV) और 2009 का फ्लू अधिक हाल की विश्वमारियों के उदाहरण हैं। १४वीं शतब्दी में फैली 'ब्लैक डेथ' नामक विश्वमारी अब तक की सबसे बड़ी विश्वमारी थी जिससे अनुमानतः साढ़े सात करोड़ से लेकर २० करोड़ लोगों की मृत्यु हुई।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएच) HO)) ने छः चरणों वाले एक वर्गीकरण का निर्माण किया है जो उस प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसके द्वारा एक नया इन्फ्लूएंज़ा विषाणु, मनुष्यों में प्रथम कुछ संक्रमणों से होते हुए एक विश्वमारी की तरफ आगे बढ़ता है। खास तौर पर पशुओं को संक्रमित करने वाले विषाणुओं से इस रोग की शुरुआत होती है और कुछ ऐसे मामले भी सामने आते हैं जहां पशु, लोगों को संक्रमित करते हैं, उसके बाद यह रोग उन चरणों से होकर आगे बढ़ता है जहां विषाणु प्रत्यक्ष रूप से लोगों के बीच फैलने लगता है और अंत में एक विश्वमारी का रूप धारण कर लेता है जब नए विषाणु से होने वाला संक्रमण पूरी दुनिया में फ़ैल जाता है।

मई 2009 में इन्फ्लूएंज़ा विश्वमारी पर आयोजित एक आभासी संवाददाता सम्मलेन में विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्वास्थ्य सुरक्षा एवं पर्यावरण के विज्ञापन अंतरिम सहायक महानिदेशक, डॉ केइजी फुकुडा, ने कहा विश्वमारी के बारे में सोचने" का एक आसान तरीका विश्वमारी :यह कहना है ..., एक वैश्विक प्रकोप है। तब आप खुद से पूछ सकते हैं"वैश्विक प्रकोप क्या है" :? वैश्विक प्रकोप का मतलब है कि हम कारक के प्रसार के साथसाथ उसके बाद विषाणु के प्रसार के अलावा रोग गतिविधियों को देख – "सकते हैं।

एक संभावित इन्फ्लूएंज़ा विश्वमारी के योजना) निर्माण में डब्ल्यूएचओ–HO) ने 1999 में विश्वमारी तैयारी मार्गदर्शन पर एक दस्तावेज़ प्रकाशित किया, 2005 में और 2009 के प्रकोप के दौरान इसे संशोधित किया और डब्ल्यूएचओ पैन्डेमिक फेज़ डिस्क्रिप्शंस एण्ड मेन एक्शंस बाई फेज़नामक एक सहायताकारी संस्मरण में इसके चरणों और प्रत्येक चरण के लिए उचित कार्रवाइयों को परिभाषित किया। इस दस्तावेज़ के सभी संस्करणों में इन्फ्लूएंज़ा का उल्लेख है। इन चरणों को रोग के प्रसार द्वारा परिभाषित किया जाता है; वर्तमान डब्ल्यूएचओ परिभाषा में द्वेष और मृत्यु दर का उल्लेख नहीं किया गया है लेकिन इन कारकों को पहले के संस्करणों में शामिल किया गया था। मानव इतिहास में असंख्य महत्वपूर्ण विश्वमारियां दर्ज है जिसमें से आम तौर पर जूनोस, जैसे इन्फ्लूएंज़ा और तपेदिक –, का नाम लिया जाता है जिसका आगमन पशुओं के पशुपालन के साथ हुआ था। ऐसी विशेष रूप से असंख्य महामारिया है जिसने मानव जीवन को प्रभावित किया है।

हैजा– (कोलेरा)

प्रथम हैजा विश्वमारी 1816-1826. पहले भारतीय उपमहाद्वीप से दूर रहने वाली विश्वमारी की शुरुआत बंगाल में हुई थी, उसके बाद यह 1820 तक सम्पूर्ण भारत में फ़ैल गया था। इस विश्वमारी के दौरान 10,000 ब्रिटिश सैनिकों और अनगिनत भारतीयों की मौत हुई थी।इसका प्रकोप कम होने से पहले इसका विस्तार चीन, इंडोनेशिया (जहां केवल जावा द्वीप में 100,000 से अधिक लोगों ने दम तोड़ दिया था) और कैस्पियन सागर तक हो गया था। 1860 और 1917 के बीच भारत में इससे मरने वाले लोगों की संख्या 15 मिलियन से अधिक होने का अनुमान है। 1865 और 1917 के बीच और 23 लाख लोगों की मौत हुई थी। इसी अवधि के दौरान इस रोग से मरने वाले रूसी लोगों की संख्या 2 मिलियन से अधिक थी।

सन्निपात– (टाइफ़स)

सन्निपात को संघर्ष दौरान फैलने की पद्धति की वजह से इसे कभी–कभी "शिविर बुखार" कहा जाता है। (इसे "जेल बुखार" और "जहाज बुखार" के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यह छोटे–छोटे क्वार्टरों, जैसे – जेलों और जहाज़ों, के क्वार्टरों में बहुत बुरी तरह से फैलता है।) क्रुसेड के दौरान उभरने वाले इस रोग का पहला प्रभाव 1489 में यूरोप में स्पेन में हुआ था। ग्रेनेडा में ईसाई स्पेनियों और मुसलमानों के बीच होने वाली लड़ाई के दौरान, 3,000 स्पेनी युद्ध में हताहत हुए और 20,000 स्पेनी सन्निपात के शिकार हो गए। 1528 में, फ्रांस को इटली 18,000 सैनिकों को खोना पड़ा और स्पेनियों के हाथों इटली में अपना वर्चस्व भी खोना पड़ गया। 1542 में, बाल्कन में ऑटोमन से लड़ते समय सन्निपात से 30,000 सैनिकों की मृत्यु हो गई।

चेचक– (स्मॉलपॉक्स)

चेचक, वेरियोला वायरस (चेचक विषाणु) की वजह से होने वाला एक अति संक्रामक रोग है। 18वीं सदी के समापन वर्षों के दौरान इस रोग से प्रति वर्ष लगभग 400,000 यूरोपीय मारे गए। अनुमान है कि 20वीं शताब्दी के दौरान

300द्500 मिलियन लोगों की मौत के लिए चेचक जिम्मेदार था। अभी बिल्कुल हाल ही में 1950 के दशक के आरंभिक दौर में दुनिया में प्रति वर्ष लगभग 50 मिलियन मामले सामने आते रहे। सम्पूर्ण 19वीं और 20वीं सदियों के दौरान सफल टीकाकरण अभियानों के बाद डब्ल्यूएचओ ने दिसंबर 1979 में चेचक की समाप्ति का प्रमाण दिया। चेचक, अब तक का सम्पूर्ण रूप से समाप्त एकमात्र मानव संक्रामक रोग है।

खसरा– (मीज़ल्ज़)

ऐतिहासिक दृष्टि से, बेहद संक्रामक होने की वजह से खसरा पूरी दुनिया में फैला हुआ था। राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार, 15 वर्ष तक की आयु के लोगों में 90% लोग खसरे से संक्रमित थे। 1963 में टीके (वैक्सीन) के आगमन से पहले अमेरिका में प्रति वर्ष इसके लगभग 3 से 4 मिलियन मामले सामने आते थे। लगभग गत 150 वर्षों में, खसरे से दुनिया भर में लगभग 200 मिलियन लोगों के मरने का अनुमान है। केवल 2000 में खसरे से दुनिया भर में लगभग 777,000 लोग मारे गए। उस वर्ष दुनिया भर में खसरे के लगभग 40 मिलियन मामले सामने आए थे। खसरा, एक स्थानिकमारी रोग है, जिसका मतलब है कि यह किसी समुदाय में लगातार मौजूद रहता है और कई लोगों में प्रतिरोध का विकास हो जाता है। जिन लोगों को खसरा नहीं हुआ है, उन लोगों में किसी नए रोग का होना विनाशकारी हो सकता है। 1529 में, क्यूबा में फैलने वाले खसरे से वहां के मूल निवासियों में दो–तिहाई लोगों की मौत हो गई जो पिछली बार चेचक के प्रकोप से बच गए थे। इस रोग ने मैक्सिको, मध्य अमेरिका और इन्का की सभ्यता कोतबाह कर दिया था।

तपेदिक– (ट्यूबरक्यूलोसिस)

वर्तमान वैश्विक जनसंख्या का लगभग एक–तिहाई हिस्सा माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्यूलोसिस से संक्रमित हो गया है और प्रति सेकण्ड एक संक्रमण की दर से नए संक्रमण हो रहे हैं।इन अव्यक्त संक्रमणों में से लगभग 5-10% संक्रमण अंत में सक्रिय रोग का रूप धारण कर लेंगे, जिसका इलाज नहीं करने पर इसके शिकार लोगों में से आधे से अधिक लोग मर जाते हैं। दुनिया भर में तपेदिक (क्षयरोग/ट्यूबरक्यूलोसिस/टीबी) से हर साल लगभग 8 मिलियन लोग बीमार होते हैं और 2 मिलियन लोग मारे जाते हैं। 19वीं सदी में, तपेदिक से यूरोप की व्यस्क जनसंख्या में से लगभग एक–चौथाई लोग मारे गए;और 1918 तक फ्रांस में मरने वाले छः लोगों में से एक की मौत टीबी की वजह से होती थी। 19वीं सदी के अंतिम दौर तक, यूरोप और उत्तरी अमेरिका की शहरी जनसंख्या में से 70 से 90 प्रतिशत लोग एम. ट्यूबरक्यूलोसिस से संक्रमित थे और शहरों में मरने वाले मजदूर–वर्ग के लगभग 40 प्रतिशत लोगों की मौत टीबी से हुई थी। 20वीं शताब्दी के दौरान, तपेदिक से लगभग 100 मिलियन लोग मारे गये।

कुष्ठरोग– (लेप्रोसी)

कुष्ठरोग (कोढ़/अपरस/लेप्रोसी), माइकोबैक्टीरियम लेप्रा नामक एक दण्डाणु की वजह से होने वाला एक रोग है जिसे हैनसेन्स डिज़ीज़ के नाम से भी जाना जाता है। यह पांच वर्षों की अवधि तक रहने वाला एक दीर्घकालिक रोग है। 1985 के बाद से दुनिया भर के 15 मिलियन लोगों को कुष्ठ रोग से ठीक किया जा चुका है। 2002 में, 763,917 नए मामलों का पता लगाया गया। अनुमान है कि एक से दो मिलियन लोग कुष्ठरोग की वजह से स्थायी रूप से अक्षम हो गए हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से, कम से कम 600 ई.पू. के बाद से लोगों पर कुष्ठरोग का असर पड़ा है और प्राचीन चीन, मिस्र और भारत की सभ्यताओं में इसे काफी अच्छी पहचान मिली थी।उच्च मध्य युग के दौरान, पश्चिमी यूरोप ने कुष्ठरोग का एक अभूतपूर्व प्रकोप देखा। मध्य युग में अनगिनत लेप्रोसारिया, या कुष्ठरोगी अस्पतालों को खोला गया था; मैथ्यू पेरिस के अनुमान के अनुसार 13वीं सदी के आरम्भ में सम्पूर्ण यूरोप में इनकी संख्या 19,000 थी।

मलेरिया

एशिया, अफ्रीका और अमेरिकास के कुछ हिस्सों सहित उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में मलेरिया का व्यापक प्रसार है। प्रत्येक वर्ष, मलेरिया के लगभग 350-500 मिलियन मामले देखने को मिलते हैं।औषध प्रतिरोध की वजह से 21वीं सदी में मलेरिया के इलाज की समस्या बढ़ती जा रही है क्योंकि आर्टमिसिनिन को छोड़कर शेष सभी मलेरिया-रोधी दवाओं से प्रतिरोध अब आम बात हो गई है।

मलेरिया, कभी उत्तरी अमेरिका और यूरोप के अधिकांश भागों में काफी आम हुआ करता था जहां इसका अब कोई चिह्न नहीं है। रोमन साम्राज्य के पतन में मलेरिया का हाथ हो सकता है। इस रोग को "रोमन फीवर" के नाम से जाना जाने लगा था। दास व्यापार के साथ-साथ अमेरिका में प्लाज्मोडियम फाल्सीपेरम की शुरुआत होने के समय यह उपनिवेशियों और स्वदेशी लोगों के लिए सच में एक खतरा बन गया था।

एचआईवी

लगभग 1969 के आरम्भ में, एचआईवी, अफ्रीका से सीधे हैती और उसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया के अधिकांश शेष हिस्सों में फ़ैल गया। जिस एचआईवी नामक विषाणु की वजह से एड्स होता है, वह वर्तमान में एक विश्वमारी है जिसका संक्रमण दर दक्षिणी और पूर्वी अफ्रीका में ज्यादा से ज्यादा 25% है। 2006 में दक्षिण अफ्रीका में गर्भवती महिलाओं में एचआईवी का व्याप्ति दर 29.1% था। सुरक्षित यौन कर्मों के बारे में प्रभावी शिक्षा और रक्तवाहक संक्रमण सावधानी प्रशिक्षण ने राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रमों को प्रायोजित करने वाले कई अफ़्रीकी देशों में संक्रमण दर की गति को धीमा करने में मदद किया है। एशिया और अमेरिका में संक्रमण दर में फिर से वृद्धि हो रही है। संयुक्त राष्ट्र के आबादी शोधकर्ताओं के अनुमान के अनुसार, 2025 तक एड्स से भारत में 31 मिलियन और चीन में 18 मिलियन लोगों की मौत हो सकती है।अफ्रीका में एड्स से मरने वाले लोगों की संख्या 2025 तक 90-100 मिलियन तक पहुंच सकती है।

पीतज्वर- (यलोफीवर)

पीत ज्वर (पीला बुखार), कई विनाशकारी महामारियों का एक स्रोत रहा है। न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया और बॉस्टन जैसे सुदूर उत्तरी शहरों पर महामारियों की मार पड़ी थी। 1793 में, अमेरिकी इतिहास की सबसे बड़ी पीत ज्वर महामारियों में से एक की वजह से फिलाडेल्फिया में अधिक से अधिक 5,000 लोग मारे गए थे जो कुल जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत था। राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन सहित लगभग आधे निवासी शहर छोड़कर चले गए थे। माना जाता है कि 19वीं सदी के दौरान स्पेन में पीत ज्वर से लगभग 300,000 लोगों की मौत हुई थी। औपनिवेशिक काल

में, मलेरिया और पीत ज्वर की वजह से पश्चिम अफ्रीका को "गोरे लोगों की कब्र" के नाम से पुकारा जाने लगा था। प्लेग ऑफ़ एथेंस, 430 ईसा पूर्व. चार वर्षों की समयावधि में टाइफाइड बुखार से एक चौथाई एथेनियन सैनिकों और एक चौथाई आबादी की मौत हो गई। इस रोग ने एथेंस केप्रभुत्व को घातक रूप से कमजोर बना दिया और इस रोग की विषाक्त उग्रता ने इसके व्यापक प्रसार को बाधित कर दिया; अर्थात् इसने अपने मेजबानों को उनके फैलने की गति से भी तेज गति से उन्हें मौत के घाट उतार दिया। प्लेग का सटीक कारण कई वर्षों तक अनजान बना रहा।

वर्तमान–विश्वमहामारी

इन्फ्लूएंज़ा ए विषाणु उपप्रकार एच1एन1 (H1N1) की एक नई नस्ल के 2009 के प्रकोप ने इस चिंता को जन्म दिया कि एक नई विश्वमारी फ़ैल रही थी। अप्रैल 2009 के उत्तरार्द्ध में, विश्व स्वास्थ्य संगठन के विश्वमारी सतर्क स्तर में तब तक क्रमानुसार स्तर तीन से स्तर पांच तक वृद्धि होती रही जब तक कि 11 जून 2009 में यह घोषणा नहीं की गई कि विश्वमारी के स्तर को इसके सबसे ऊंचे स्तर, स्तर छः, तक बढ़ा दिया गया था। 1968 के बाद से यह इस स्तर की पहली विश्वमारी थी। 11 जून 2009 को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक, डॉ॰ मार्गरेट चान, ने अपने बयान में इस बात की पुष्टि की कि एच1एन1 वास्तव में एक विश्वमारी है जिसके दुनिया भर में लगभग 30,000 मामलों के सामने आने की पुष्टि हो चुकी है।

mijkDr o"kfod egkekjh d o.ku l ;g Li"V :i l le>k tk ldrk g fd idfr ijekFk dk irhd g bulku ijekFk dk Hkydj LokFk flf) e yx x;k gA ekuo u vxj vc Hkh ikdfrd lk/kuk d lkFk [kyokj tkjh j[kk vkj iFoh dk nkgu djrk jgk rk vku okyk dy e ge **और भी घातक वैष्विक महामारियों का सामना करना पर सकता है।**

सन्दर्भ

१.विश्वमारी चेतावनी के वर्तमान डब्ल्यूएचओ चरण।

२.डब्ल्यूएचओ के विश्वमारी के चरणों का विवरण और मुख्य कार्य।

३.http/online.j.com/rticle/

४.Dontoerth

५.2009 के इन्फ्लूएंज़ा विश्वमारी पर डब्ल्यूएचओ का पत्रकार सम्मलेन

६.आनुवंशिक अध्ययन से पता चलता है कि यह विषाणु हैती के रास्ते अमेरिका पहुंच गया।

७.यूरोप में कहर ढाने वाली पिछली विश्वमारियां.बी.बी.सी.समाचार सात novemver

८.http://urbnrim.org.uk/plgue%20list.htm

९.http://.bbc.co.uk/history/britih/middle_ge/blck_09.htm